भारत के ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार: देवी अहिल्याबाई का प्रेरणादायक योगदान

डॉ. सुनीता सोनी
सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र,
शासकीय मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महिला महाविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश
ईमेल- drsunitasoni3120@gmail.com | संपर्क - 9340525354

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17636802

शोधसार

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा भारत के ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार में उनके प्रेरणादायक एवं युगांतरकारी योगदान का विस्तृत एवं संदर्भ सहित विवेचन करना है। इसके अंतर्गत उनके द्वारा किए गए कार्यों के पीछे निहित प्रेरणाओं, उनके द्वारा अपनाई गई विशिष्ट पद्धतियों, इन कार्यों के सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रभावों तथा उनकी स्थायी विरासत का गहन मूल्यांकन किया है।

अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल (1767-1795) पर केंद्रित है। इसमें उनके द्वारा जीर्णोद्धारित एवं नवनिर्मित प्रमुख मंदिरों, घाटों, धर्मशालाओं, जलाशयों, मार्गों एवं अन्य जनोपयोगी संरचनाओं का विस्तृत अध्ययन समाहित है। विशेष रूप से काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, गया, द्वारका, रामेश्वरम जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तीर्थस्थलों के साथ-साथ भारत के विभिन्न कोनों में उनके द्वारा किए गए असंख्य निर्माण कार्यों को सम्मिलित किया है।

ऐतिहासिक स्रोतों, समकालीन विवरणों, विद्वानों के अध्ययनों एवं शोध-सामग्री स्निपेट्स [1] के गहन एवं तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित होगा। इन स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए, उन्हें तार्किक क्रम में प्रस्तुत कर निष्कर्ष निकाले जाएंगे। इस प्रकार, यह शोध-प्रविधि अध्ययन की गंभीरता, प्रामाणिकता और व्यापकता को सुनिश्चित करने का प्रयास करेगी, ताकि पाठक देवी अहिल्याबाई के योगदान को उसकी समग्रता में समझ सकें।

कुंजी शब्द : धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार, **सामाजिक समरसता**, **नैतिक शासन**, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय स्वाभिमान ।

1. प्रस्तावना

देवी अहिल्याबाई होल्कर का परिचय: एक असाधारण शासिका एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व

भारतीय इतिहास के पटल पर कुछ ऐसे व्यक्तित्व अवतरित हुए हैं जिन्होंने अपने कार्यों और आदर्शों से एक अमिट छाप छोड़ी है। देवी अहिल्याबाई होल्कर (जन्म: 31 मई 1725, चौंडी; मृत्यु: 13 अगस्त 1795, इंदौर)निस्संदेह ऐसी ही एक असाधारण विभूति थीं। वे केवल एक शासिका ही नहीं, अपितु एक दूरदर्शी नेत्री, कुशल प्रशासक, न्यायप्रिय मार्गदर्शिका एवं गहन आस्थावान व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। उनका लगभग तीन दशकों का शासनकाल (1767-1795) मालवा साम्राज्य के लिए शांति, स्थिरता और चहुंमुखी प्रगति का काल माना जाता है, जिसे होल्कर वंश का स्वर्णयुग भी कहा गया है [1]। उनके असाधारण गुणों और प्रजा के प्रति समर्पण के कारण ही समाज ने उन्हें 'पुण्यश्लोका', 'लोकमाता', 'मातोश्री', 'न्यायप्रिया' जैसी आदरसूचक उपाधियों से विभूषित किया, जो उनके प्रति जनमानस में व्याप्त गहरे सम्मान और अगाध श्रद्धा को परिलक्षित करता है [3]। यह परिचय अहिल्याबाई के बहुआयामी व्यक्तित्व को स्थापित करता है, जो उनके द्वारा किए गए व्यापक धार्मिक एवं लोक-कल्याणकारी कार्यों को समझने के लिए एक सुदृढ़ पृष्ठभूमि प्रदान करता है। उन्हें केवल एक रानी के रूप में नहीं, बल्कि एक 'दार्शनिक रानी' (Philosopher Queen) [5] के रूप में भी स्मरण किया जाता है, जिनकी दृष्टि में शासन और धर्म, सेवा और आध्यात्मिकता परस्पर सम्बद्ध थे।

2. देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन एवं शासनकाल: प्रेरणा का एक स्रोत

प्रारंभिक जीवन, वैयक्तिक संघर्ष एवं आध्यात्मिक झुकाव

देवी अहिल्याबाई का जन्म 31 मई, 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी नामक ग्राम में एक साधारण, किंतु सुसंस्कृत परिवार में हुआ था [1]। उनके पिता, मानकोजी शिंदे, गांव के पाटिल थे और उन्होंने अपनी पुत्री को पढ़ने-लिखने की शिक्षा दी, जो उस युग में महिलाओं के लिए एक असाधारण बात थी [1]। मात्र आठ वर्ष की अल्पायु में, जब वे अपने गांव के मंदिर में सेवा कर रही थीं, मालवा के तत्कालीन शासक मल्हार राव होल्कर की दृष्टि उन पर पड़ी। बालिका अहिल्या की सहजता, बुद्धिमत्ता और धार्मिक प्रवृत्ति से प्रभावित होकर मल्हार राव ने अपने पुत्र खंडेराव होल्कर के साथ उनका विवाह संपन्न कराया [1]।

अहिल्याबाई का वैवाहिक जीवन और उसके उपरांत का काल अनेक व्यक्तिगत त्रासदियों और संघर्षों से भरा रहा। उनके पति, महाराज खंडेराव, 1754 में कुम्हेर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, जब अहिल्याबाई मात्र 29 वर्ष की थीं [1]। यह उनके जीवन का एक बड़ा आघात था। इसके पश्चात, 1766 में उनके श्वसुर, पितृवत स्नेह देने वाले मल्हार राव होल्कर का भी निधन हो गया [1]। इन विपत्तियों का

सिलसिला यहीं नहीं थमा; उनके एकमात्र पुत्र मालेराव, जो मल्हार राव के बाद गद्दी पर बैठे, का भी 1767 में अल्पायु में ही देहांत हो गया [1]। इन निरंतर व्यक्तिगत आघातों और जीवन की विषमताओं ने निस्संदेह उनके व्यक्तित्व को और भी अधिक अंतर्मुखी, दृढ़ और आध्यात्मिक बनाया होगा। भगवान शिव और पवित्र नर्मदा नदी में उनकी अगाध, अटूट आस्था थी, जो उनके लिए शक्ति, शांति और प्रेरणा का निरंतर स्रोत बने रहे [10]। वे संपूर्ण राज्य को भगवान शिव को समर्पित मानती थीं और स्वयं को केवल उनकी एक सेविका, एक निमित्त मात्र समझती थीं [3]। यह गहन आध्यात्मिक झुकाव उनके प्रत्येक कार्य, चाहे वह प्रशासनिक हो या धार्मिक, का मूल आधार बना।

मालवा की शासिका के रूप में उदय एवं प्रशासनिक कौशल

मल्हार राव होल्कर के दत्तक पुत्र तुकोजी राव होल्कर को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया, जिन्होंने अगले 28 वर्षों तक निष्ठापूर्वक उनकी सेवा की [1]।

देवी अहिल्याबाई का शासनकाल, जो 1767 से 1795 तक लगभग तीन दशकों तक चला [5], मालवा के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में अंकित है। उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर से नर्मदा तट पर स्थित सुरम्य नगरी महेश्वर में स्थानांतरित की [1]। एक कुशल प्रशासक के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली। उनके शासनकाल में इंदौर राज्य में अभूतपूर्व शांति और सुरक्षा स्थापित हुई, जिससे व्यापार और वाणिज्य को अत्यधिक बढ़ावा मिला। समाज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समरसता का वातावरण निर्मित हुआ [7]। एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया और अपनी प्रजा के लिए सदैव सुलभ रहीं। वे प्रतिदिन जनसुनवाई करती थीं, जहाँ कोई भी सामान्य नागरिक अपनी समस्या लेकर सीधे उन तक पहुँच सकता था [1]। उनकी प्रशासनिक क्षमता, दूरदर्शिता और प्रजा के प्रति समर्पण ने ही इतने व्यापक पैमाने पर धार्मिक जीर्णोद्धार और लोक-कल्याणकारी कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करना संभव बनाया।

न्यायप्रियता, लोक-कल्याण एवं सुशासन के सिद्धांत

देवी अहिल्याबाई को उनकी न्यायप्रियता के लिए 'न्याय की देवी' के रूप में भी स्मरण किया जाता है [2]। उनकी न्याय व्यवस्था निष्पक्ष, त्वरित और सुलभ थी। उनकी न्यायप्रियता और करुणा उनके व्यक्तित्व की विशेष पहचान बन गई थी [7]। वे छोटे से छोटे और महत्वहीन समझे जाने वाले मामलों की भी स्वयं धैर्यपूर्वक सुनवाई करती थीं, ताकि किसी के साथ अन्याय न हो और सभी पक्षों को पूर्ण संतोष प्राप्त हो सके [5]।

उनका शासन 'सुशासन' (good governance), कुशल प्रशासन, परोपकार, धर्म कल्याण, जल संवर्धन और जल संरक्षण जैसे उदात्त सिद्धांतों पर आधारित था [7]। वे मानती थीं कि शासक का प्रथम कर्तव्य अपनी प्रजा का कल्याण सुनिश्चित करना है। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने असंख्य लोक-

कल्याणकारी कार्य किए। उन्होंने भूखों के लिए अन्न क्षेत्र (लंगर) खोले, प्यासे यात्रियों और पशु-पक्षियों के लिए प्याऊ बनवाए, जल संरक्षण और आपूर्ति के लिए अनगिनत कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, तथा नदियों के किनारे स्नान और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए अनेकानेक घाटों का निर्माण करवाया [7]। इतना ही नहीं, उन्होंने निराश्रित विधवाओं और अनाथ बच्चों के लिए आश्रमों की भी स्थापना की [9]। उनके इन कार्यों की प्रशंसा केवल भारतीय ही नहीं, बल्कि सर जॉन मैल्कम जैसे समकालीन ब्रिटिश इतिहासकारों ने भी मुक्त कंठ से की है। मैल्कम ने उन्हें "सबसे शुद्ध और अनुकरणीय शासकों में से एक जो कभी अस्तित्व में थीं" कहकर उनके प्रति अपना गहरा सम्मान व्यक्त किया [5]। उनके लोक-कल्याणकारी कार्य उनके धार्मिक कार्यों के अभिन्न पूरक थे। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनकी दृष्टि में 'धर्म' केवल पूजा-पाठ या मंदिर निर्माण तक सीमित नहीं था, बल्कि मानव सेवा और अपनी प्रजा का सर्वांगीण कल्याण भी उसका एक अविभाज्य अंग था।

3. भारत के ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार में अहिल्याबाई का युगांतरकारी योगदान

धार्मिक आस्था एवं सांस्कृतिक संरक्षण की प्रेरणा

देवी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन और कार्यों के मूल में उनकी गहन धार्मिक आस्था और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम एवं समर्पण निहित था। वे भगवान शिव की अनन्य भक्त थीं और यह मानती थीं कि हिन्दू धर्म, उसकी मान्यताओं और उसके पवित्र स्थलों की रक्षा करना तथा उनका प्रचार-प्रसार करना एक शासक के रूप में उनका परम कर्तव्य है [6]। वे विदेशी आक्रांताओं, विशेषकर मुगल बादशाह औरंगजेब द्वारा हिन्दू मंदिरों के विध्वंस और अपमान से अत्यंत व्यथित और आहत थीं [6]। इसी पीड़ा ने उन्हें इन ध्वस्त और उपेक्षित पवित्र स्थलों के पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार के लिए प्रेरित किया।

उनका उद्देश्य केवल मंदिरों का भौतिक पुनर्निर्माण करना ही नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति और उसकी गौरवशाली परंपराओं को बढ़ावा देना [7], सनातन हिन्दू संस्कृति का संरक्षण करना [14] और इस अमूल्य धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना भी था [1]। वे अपने समस्त कार्यों को ईश्वर की सेवा मानती थीं और इसी भावना के प्रतीक स्वरूप वे राज्य के आदेशों पर अपने हस्ताक्षर करने के बजाय "श्रीशंकर" अंकित राजमुद्रा का प्रयोग करती थीं [3]। यह उनके कार्यों के पीछे केवल राजनीतिक या सामाजिक कर्तव्य की भावना नहीं, बल्कि एक गहरे आध्यात्मिक आह्वान और प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

प्रमुख जीर्णोद्धारित एवं नवनिर्मित मंदिर व तीर्थस्थल

देवी अहिल्याबाई होल्कर ने अपने शासनकाल में भारतवर्ष के कोने-कोने में स्थित असंख्य मंदिरों, घाटों और अन्य धार्मिक संरचनाओं का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण करवाया। उनके ये कार्य उनकी अखिल भारतीय दृष्टि और सांस्कृतिक एकता की भावना को दर्शाते हैं।

- **काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी:** विध्वंस से पुनर्निर्माण तक मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर वर्ष 1669 में प्राचीन काशी विश्वनाथ मंदिर को ध्वस्त कर दिया गया था। इस विध्वंस के लगभग एक शताब्दी पश्चात, इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1780 ई. में काशी विश्वनाथ मंदिर की वर्तमान संरचना का निर्माण करवाया 6। यह उनके सबसे प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण कार्यों में से एक माना जाता है। उन्होंने न केवल मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, बल्कि वैदिक रीति-रिवाज के अनुसार ग्यारह प्रतिष्ठित शास्त्रीय आचार्यों द्वारा शिवलिंग की प्राण-प्रतिष्ठा भी करवाई 8। इस पुनीत कार्य में तत्कालीन काशी नरेश, महाराजा चेत सिंह ने भी महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया, जिसमें कारीगरों और मजदूरों की सुरक्षा तथा आर्थिक मदद शामिल थी 8। वर्तमान मंदिर लगभग 51 फीट ऊंचा है और पत्थर से निर्मित है। इसमें एक भव्य गुंबजदार जगमोहन और दंडपाणीश्वर का पूर्व मुखी शिखरदार मंदिर भी सम्मिलित है 14। यह बताता है कि भगवान विश्वनाथ ने स्वयं अहिल्याबाई को स्वप्न में दर्शन देकर मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया था। यह वृत्तांत उनके कार्यों को एक दैवीय प्रेरणा से जोड़ता है और जनमानस में उनके प्रति श्रद्धा को और भी गहरा करता है।
- **सोमनाथ मंदिर, गुजरात:** राष्ट्रीय अस्मिता का पुनरुत्थान गुजरात के प्रभास पाटन में स्थित सोमनाथ मंदिर, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम, अनेक विदेशी आक्रांताओं, विशेषकर महमूद गजनवी, के आक्रमणों और विध्वंस का शिकार हुआ था। देवी अहिल्याबाई ने इस राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक मंदिर का भी पुनर्निर्माण करवाया 9। उन्होंने लगभग 1783 ई. में पुणे के पेशवा के सहयोग से मूल ध्वस्त मंदिर के निकट एक नवीन मंदिर का निर्माण कराया। इस मंदिर का गर्भगृह सुरक्षा की दृष्टि से भूमिगत बनाया गया था 9। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मुख्य मंदिर के आसपास भव्य सिंहद्वार (मुख्य प्रवेश द्वार) और दालानों (हॉल) का भी निर्माण करवाया, जिससे मंदिर परिसर अधिक सुरक्षित और सुव्यवस्थित हो गया 14। यह मंदिर आज भी 'पुराना सोमनाथ' या 'अहिल्याबाई मंदिर' के नाम से जाना जाता है और सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा निर्मित वर्तमान भव्य सोमनाथ मंदिर के निकट स्थित है 29।
- **विष्णुपद मंदिर, गया:** पितृ-ऋण एवं धार्मिक महत्व बिहार के गया में स्थित विष्णुपद मंदिर, जहाँ भगवान विष्णु के चरण-चिह्न प्रतिष्ठित माने जाते हैं और जो पितृ-श्राद्ध के लिए हिन्दू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ है, का भी देवी अहिल्याबाई ने जीर्णोद्धार करवाया 11। इस मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए उन्होंने विशेष रूप से राजस्थान से लगभग 300 कुशल गौड़ ब्राह्मण कलाकारों और शिल्पकारों

को गया में लाकर बसाया था। इन कारीगरों ने स्थानीय रूप से उपलब्ध काले ग्रेनाइट पत्थर को तराशकर इस भव्य मंदिर का निर्माण किया 37। मंदिर का निर्माण कार्य लगभग 1787 ई. के आसपास पूर्ण हुआ 30।

- रामेश्वरम, द्वारका, उज्जैन, महेश्वर एवं अन्य ज्योतिर्लिंगों व महत्वपूर्ण स्थलों पर कार्य देवी अहिल्याबाई का योगदान केवल काशी, सोमनाथ और गया तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने भारतवर्ष में फैले अनगिनत ज्योतिर्लिंगों, शक्तिपीठों और अन्य महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों पर व्यापक निर्माण और जीर्णोद्धार कार्य करवाए।
    - **रामेश्वरम (तमिलनाडु):** यहाँ स्थित प्रसिद्ध रामनाथस्वामी मंदिर परिसर में उन्होंने विभिन्न मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया [15]। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यहाँ हनुमान मंदिर का निर्माण [39], तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशालाओं और पवित्र जल कुंडों (तीर्थम) का निर्माण भी करवाया [34]।
    - **द्वारका (गुजरात):** भगवान कृष्ण की नगरी द्वारका में स्थित द्वारकाधीश मंदिर सहित अन्य मंदिरों का पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार उनके प्रमुख कार्यों में से एक था [15]। उन्होंने यहाँ तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाओं में भी सुधार किया [39]।
    - **उज्जैन (मध्य प्रदेश):** महाकाल की नगरी उज्जैन में उन्होंने प्रसिद्ध चिंतामणि गणपति मंदिर [14] और महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया [7]। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यहाँ एक राम मंदिर का भी निर्माण करवाया [14]।
    - **महेश्वर (मध्य प्रदेश):** उनकी राजधानी महेश्वर नर्मदा नदी के तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र था। यहाँ उन्होंने अनेक प्राचीन मंदिरों, घाटों का जीर्णोद्धार करवाया तथा कई नए मंदिर, घाट और भव्य भवनों का निर्माण करवाया [14]। अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर उन्होंने यहाँ नर्मदा घाट पर भगवान परशुराम के मंदिर का निर्माण करवाया [14]। प्रसिद्ध अहिल्येश्वर मंदिर भी उनके द्वारा निर्मित एक महत्वपूर्ण संरचना है [48]।
    - **अन्य ज्योतिर्लिंग एवं महत्वपूर्ण स्थल:** उनके द्वारा जीर्णोद्धारित अन्य प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में घृष्णेश्वर (एलोरा, महाराष्ट्र, लगभग 1780 में पुनर्निर्माण) [11], ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश) [6], परली वैजनाथ (महाराष्ट्र) [6], और श्रीशैलम (आंध्र प्रदेश) [6] शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, उन्होंने केदारनाथ [6] और बद्रीनाथ [6] जैसे हिमालयी तीर्थों; हरिद्वार (उत्तराखंड, जहाँ उन्होंने कुशावर्त घाट का पक्का निर्माण करवाया और दत्तात्रेय मंदिर स्थापित किया) [6]; अयोध्या (उत्तर प्रदेश, जहाँ राम मंदिर का निर्माण करवाया) [6]; मथुरा (उत्तर प्रदेश) [6]; नासिक (महाराष्ट्र) [6]; पंढरपुर (महाराष्ट्र) [6]; जगन्नाथपुरी (ओडिशा, जहाँ उन्होंने मंदिर को दान दिया और एक छत्र भी भेंट किया) [14]; प्रयाग (उत्तर प्रदेश), कुरुक्षेत्र (हरियाणा), पशुपतिनाथ (काठमांडू, नेपाल), उडुपी

(कर्नाटक), और गोकर्ण (कर्नाटक) [6] जैसे अनगिनत पवित्र स्थलों पर निर्माण और जीर्णोद्धार के कार्य किए। इन स्थलों की व्यापक सूची [6] उनके अखिल भारतीय दृष्टिकोण और उनकी गहरी धार्मिक निष्ठा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। वे केवल अपने राज्य मालवा तक ही सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने संपूर्ण भारतवर्ष को एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक इकाई के रूप में देखा। ज्योतिर्लिंगों पर उनका विशेष ध्यान उनकी प्रगाढ़ शिवभक्ति और इन राष्ट्रीय महत्व के स्थलों के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा को रेखांकित करता है।

- **तालिका 1: देवी अहिल्याबाई द्वारा जीर्णोद्धारित/निर्मित प्रमुख धार्मिक एवं जनोपयोगी संरचनाएं**

यह तालिका अहिल्याबाई के कार्यों की विशालता और विविधता को एक संक्षिप्त और सुलभ प्रारूप में प्रस्तुत करती है। यह पाठकों को उनके योगदान के भौगोलिक विस्तार और विभिन्न प्रकार के निर्माणों (मंदिर, घाट, धर्मशाला आदि) को एक दृष्टि में समझने में मदद करेगी।

स्थल का नाम	**स्थान (राज्य)**	**संरचना का प्रकार (मंदिर, घाट, धर्मशाला, कुआँ, मार्ग आदि)**	**विशिष्ट योगदान/विवरण**
काशी विश्वनाथ मंदिर	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	मंदिर	औरंगजेब द्वारा ध्वस्त मंदिर का 1780 में पुनर्निर्माण, वैदिक रीति से प्राण-प्रतिष्ठा
सोमनाथ मंदिर	प्रभास पाटन (गुजरात)	मंदिर	ध्वस्त मंदिर के पास 1783 में नवीन मंदिर निर्माण, सिंहद्वार व दालान, गर्भगृह भूमिगत
विष्णुपद मंदिर	गया (बिहार)	मंदिर	1787 के आसपास पुनर्निर्माण, काले ग्रेनाइट पत्थर का उपयोग, राजस्थानी कारीगरों द्वारा निर्मित, अष्टकोणीय शिखर
मणिकर्णिका घाट	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	घाट	निर्माण
अहिल्याबाई घाट	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	घाट, महल	घाट एवं समीपस्थ महल का निर्माण

शीतला घाट	वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	घाट	जीर्णोद्धार
कुशावर्त घाट	हरिद्वार (उत्तराखंड)	घाट, मंदिर	पक्के घाट में जीर्णोद्धार, पिंडदान स्थल निर्माण, दत्तात्रेय मंदिर की स्थापना
घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग	एलोरा (महाराष्ट्र)	मंदिर	1780 के आसपास पुनर्निर्माण
ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग	मध्य प्रदेश	मंदिर, धर्मशाला	मंदिर जीर्णोद्धार, धर्मशाला निर्माण
रामेश्वरम मंदिर परिसर	तमिलनाडु	मंदिर, धर्मशाला, जल कुंड	मंदिरों का जीर्णोद्धार, हनुमान मंदिर निर्माण, धर्मशाला एवं जल कुंड निर्माण
द्वारकाधीश मंदिर परिसर	गुजरात	मंदिर, सुविधाएं	मंदिरों का पुनर्निर्माण/जीर्णोद्धार, तीर्थयात्री सुविधाओं में सुधार
धर्मशालाएं	केदारनाथ, बद्रीनाथ	धर्मशाला	तीर्थयात्रियों हेतु विश्राम गृहों का निर्माण
अन्नक्षेत्र (सदाव्रत)	बद्रीनाथ, देवप्रयाग	अन्नक्षेत्र	निःशुल्क भोजन व्यवस्था
मार्ग निर्माण	कलकत्ता से बनारस तक	सड़क	तीर्थयात्रियों एवं व्यापार हेतु मार्ग निर्माण
जलाशय (कुएं, बावड़ियां)	विभिन्न स्थल	कुएं, बावड़ियां	जल संरक्षण एवं आपूर्ति हेतु निर्माण

अहिल्याबाई द्वारा मुगल आक्रमणकारियों द्वारा ध्वस्त किए गए प्रमुख मंदिरों जैसे काशी विश्वनाथ और सोमनाथ का पुनर्निर्माण करवाना केवल एक धार्मिक कार्य नहीं था, बल्कि यह एक शक्तिशाली राजनीतिक और सांस्कृतिक वक्तव्य भी था। यह हिंदू धर्म की जीवंतता, उसकी सहनशीलता और दृढ़ता का प्रतीक था। मुगल शासन के पतन और मराठा शक्ति के उदय के समकालीन संदर्भ में, इन कार्यों ने

हिंदू गौरव और पहचान को पुनर्स्थापित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई [6]। उनके ये कार्य "हिंदू संस्कृति और विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार में अपार और अद्वितीय" माने जाते हैं [6]।

अहिल्याबाई के धार्मिक निर्माण कार्यों का पैमाना और उनका भौगोलिक विस्तार, जो हिमालय से लेकर दक्षिण भारत तक और पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था [39], उनके राज्य मालवा की सीमाओं से कहीं अधिक व्यापक था। यह उनके अखिल भारतीय दृष्टिकोण और विभिन्न रियासतों तथा शासकों के साथ उनके सौहार्दपूर्ण राजनयिक संबंधों को भी दर्शाता है। उदाहरण के लिए, काशी विश्वनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए उन्हें अवध के नवाब और काशी नरेश से अनुमति और सहयोग प्राप्त हुआ था [6]। यह उनके असाधारण प्रभाव और सम्मान को इंगित करता है जो उन्हें अपने क्षेत्र के बाहर भी प्राप्त था, और जो ऐसे राष्ट्रव्यापी परोपकारी कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए नितांत आवश्यक था।

उनके द्वारा न केवल मंदिरों का निर्माण, बल्कि उनसे जुड़ी सहायक संरचनाओं जैसे घाटों, धर्मशालाओं, कुओं, बावड़ियों और मार्गों का व्यापक निर्माण [6] एक समग्र लोक-कल्याणकारी दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह केवल पारलौकिक पुण्य की प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि सामान्य जन के इहलौकिक जीवन को सुगम और बेहतर बनाने का भी एक गंभीर प्रयास था। यह 'धर्म' की उस व्यापक भारतीय परिभाषा को क्रियान्वित करता है जिसमें 'अर्थ' (समृद्धि) और 'काम' (सुख) का भी सम्यक ध्यान रखा गया हो, जो अंततः 'मोक्ष' की ओर ले जाए। यह उनके 'प्रजावत्सला' [3] और 'लोकमाता' [3] स्वरूप को पूरी तरह चरितार्थ करता है।

4. अहिल्याबाई के योगदान का बहुआयामी प्रभाव एवं मूल्यांकन

सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत का संरक्षण एवं पुनर्जागरण

देवी अहिल्याबाई होल्कर के कार्यों ने न केवल जीर्ण-शीर्ण भौतिक संरचनाओं को बचाया और उन्हें नया जीवन दिया, बल्कि उनसे जुड़ी अमूर्त धार्मिक प्रथाओं, सांस्कृतिक परंपराओं और स्थानीय पहचानों को भी पुनर्जीवित किया [6]। आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त किए गए मंदिरों के पुनर्निर्माण से हिंदू समाज में आत्मगौरव, सांस्कृतिक निरंतरता और अपनी जड़ों से जुड़ाव की भावना और भी मजबूत हुई [4]। यह केवल ईंट-पत्थर का निर्माण नहीं था, बल्कि यह एक सभ्यता की आत्मा का पुनरुत्थान था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कई मंदिरों में विद्वानों और पंडितों की नियुक्ति कर शास्त्रों के नियमित अध्ययन, मनन-चिंतन और प्रवचन की व्यवस्था भी की [14]। इससे न केवल धार्मिक ज्ञान परंपरा को बल मिला, बल्कि समाज में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का भी प्रसार हुआ। उनका यह समग्र योगदान केवल इमारतों के जीर्णोद्धार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सूत्रपात था जिसने भारतीय सभ्यता की जड़ों को सींचा और उसे नई ऊर्जा प्रदान की।

सामाजिक समरसता एवं स्थानीय समुदायों पर आर्थिक प्रभाव

देवी अहिल्याबाई के व्यापक निर्माण कार्यों का स्थानीय समुदायों पर महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ा। इन परियोजनाओं से स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों, राजमिस्त्रियों और मजदूरों को बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर प्राप्त हुए [1]। उदाहरण के लिए, गया में विष्णुपद मंदिर के निर्माण के लिए राजस्थान से कारीगरों को बुलाया गया और उन्हें वहीं बसाया गया [37]। अपनी राजधानी महेश्वर में उन्होंने वस्त्र उद्योग को विशेष प्रोत्साहन दिया, जिससे वहाँ के बुनकरों को आजीविका मिली और महेश्वरी साड़ियाँ विश्व प्रसिद्ध हुईं [1]। मंदिर और तीर्थस्थल धीरे-धीरे स्थानीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए, जिससे आसपास के क्षेत्रों में व्यापार और वाणिज्य को भी बढ़ावा मिला।

इसके अतिरिक्त, देवी अहिल्याबाई ने समाज के सभी वर्गों के कल्याण का ध्यान रखा। उन्होंने भील और गोंड जैसी जनजातियों, जो पहले लूटपाट और उपद्रव के लिए जानी जाती थीं, को कृषि कार्यों और यात्रियों की सुरक्षा जैसे सम्मानजनक कार्यों से जोड़कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने का सफल प्रयास किया [4]। उनके दरबार और राज्य में सभी जातियों और समुदायों के लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाता था और सभी का सम्मान था [7]। इस प्रकार, उनके धार्मिक और लोक-कल्याणकारी कार्य सामाजिक समरसता और आर्थिक विकास के भी महत्वपूर्ण वाहक बने। यह दर्शाता है कि धर्म, समाज सेवा और आर्थिक प्रगति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं यदि शासक की दृष्टि व्यापक और कल्याणकारी हो।

समकालीन एवं पाश्चात्य इतिहासकारों द्वारा प्रशस्ति

देवी अहिल्याबाई होल्कर के असाधारण व्यक्तित्व, न्यायप्रिय शासन और व्यापक परोपकारी कार्यों की प्रशंसा न केवल उनके समकालीन भारतीय विद्वानों और कवियों ने की, बल्कि कई पाश्चात्य इतिहासकारों और अधिकारियों ने भी उनके प्रति गहरा सम्मान व्यक्त किया है। सर जॉन मैल्कम, जो एक स्कॉटिश राजनयिक, प्रशासक और सैनिक थे और जिन्होंने बाद में मध्य भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित करने में भूमिका निभाई, ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'मेमॉयर ऑफ सेंट्रल इंडिया' (A Memoir of Central India) में देवी अहिल्याबाई के शासन, उनकी न्यायप्रियता, प्रशासनिक कौशल और उनके द्वारा किए गए धर्मार्थ कार्यों की विस्तृत एवं निष्पक्ष रूप से भूरि-भूरि प्रशंसा की है [5]। मैल्कम ने लिखा है, "उनके विषय में जितनी अधिक जांच और पूछताछ की जाती है, उनके प्रति उतनी ही अधिक प्रशंसा और आदर भाव उत्पन्न होता है।" उन्होंने अहिल्याबाई को "उन सबसे शुद्ध और अनुकरणीय शासकों में से एक माना जो कभी इस धरती पर अस्तित्व में थीं" [5]।

इसी प्रकार, एक अन्य स्कॉटिश कवयित्री, जोआना बैली ने वर्ष 1849 में देवी अहिल्याबाई के शांतिपूर्ण और कल्याणकारी शासन की प्रशंसा करते हुए एक मार्मिक कविता लिखी थी [4]। उनके समकालीन भारतीय स्रोत भी उनके शासनकाल के दौरान राज्य में व्याप्त शांति, समृद्धि और चहुंमुखी उन्नति का उल्लेख करते हैं [4]। यह महत्वपूर्ण है कि ब्रिटिश अधिकारी और इतिहासकार, जो सामान्यतः भारतीय शासकों और उनकी व्यवस्थाओं के प्रति आलोचनात्मक या पूर्वाग्रहपूर्ण रुख रखते थे, भी देवी अहिल्याबाई के गुणों और उनके शासन की उत्कृष्टता को स्वीकार करने के लिए विवश हुए। यह उनके प्रभाव की सार्वभौमिकता और उनके कार्यों की महानता को निर्विवाद रूप से प्रमाणित करता है।

अहिल्याबाई द्वारा तीर्थस्थलों पर व्यापक सुविधाओं जैसे धर्मशाला, अन्नक्षेत्र, घाट, और मार्गों का निर्माण करने से तीर्थयात्रा अधिक सुलभ और सुरक्षित हो गई। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि अधिक संख्या में सामान्यजन भी, जो पहले यात्रा की कठिनाइयों और व्यय के कारण अक्षम थे, अब तीर्थयात्रा करने में सक्षम हुए। इससे न केवल धार्मिक चेतना और आस्था में वृद्धि हुई, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संपर्क भी बढ़ा [14]। उनके द्वारा विभिन्न मंदिरों और तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार और उनमें पूजा-पाठ की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करना, एक प्रकार से भारत के 'धार्मिक मानचित्र' को पुनर्जीवित और सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। यह उस समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण था जब देश में राजनीतिक विखंडन और अस्थिरता के कारण सांस्कृतिक और धार्मिक संपर्क सूत्र कमजोर पड़ सकते थे। उनके ये कार्य एक प्रकार से 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की नींव रखते प्रतीत होते हैं, जो साझा धर्म, आस्था और विरासत पर आधारित था [16]। अहिल्याबाई के कार्यों में केवल बड़े और प्रसिद्ध मंदिरों पर ही ध्यान केंद्रित नहीं था, बल्कि उन्होंने अपेक्षाकृत कम ज्ञात या स्थानीय महत्व के स्थलों पर भी समान रूप से ध्यान दिया। साथ ही, उन्होंने केवल मंदिरों का ही निर्माण नहीं किया, बल्कि उनसे जुड़ी सहायक संरचनाओं जैसे घाट, कुंड, धर्मशालाओं और परंपराओं जैसे विद्वानों की नियुक्ति, पूजा की नियमित व्यवस्था आदि का भी समग्र विकास किया [14]। यह उनके सूक्ष्म प्रबंधन, दूरदर्शिता और समग्र दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

5. प्रेरणापुंज अहिल्याबाई: एक कालातीत आदर्श

'पुण्यश्लोका' एवं 'लोकमाता' के रूप में उनकी स्वीकृति

देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन त्याग, तपस्या, धर्मपरायणता, न्यायप्रिय शासन और अथाह लोक-कल्याणकारी कार्यों का एक ऐसा अनुपम उदाहरण है कि भारतीय समाज ने उन्हें स्वतःस्फूर्त रूप से 'पुण्यश्लोका' (अर्थात, जिनकी कीर्ति पवित्र है और जिनका नाम लेने मात्र से पुण्य प्राप्त होता है) और 'लोकमाता' (अर्थात, संपूर्ण प्रजा की माता) जैसी सर्वोच्च उपाधियों से विभूषित किया। ये उपाधियाँ केवल

औपचारिक सम्मान या अलंकरण मात्र नहीं हैं, बल्कि ये उनके प्रति भारतीय जनमानस में व्याप्त अगाध श्रद्धा, गहरे प्रेम और एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में उनकी स्वीकृति को प्रकट करती हैं। सर जॉन मैल्कम जैसे पाश्चात्य विद्वान ने भी यह उल्लेख किया है कि उनकी मृत्यु के कई दशकों बाद भी उनकी स्मृति मध्य भारत की प्रजा के हृदय में अत्यंत गहरी श्रद्धा और सम्मान के साथ संजोई हुई थी। ये उपाधियाँ और जनभावनाएँ उनके जीवन और कार्यों के गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का अकाट्य प्रमाण हैं। वे आज भी भारतीय मानस में एक आदर्श शासिका, एक धर्मनिष्ठ महिला और एक करुणामयी माँ के रूप में जीवित हैं, जिनकी गाथाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रेरणा प्रदान करती रहती हैं।

आधुनिक भारत में उनके कार्यों की प्रासंगिकता: विरासत संरक्षण, महिला सशक्तिकरण एवं नैतिक शासन

देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन और उनके द्वारा किए गए कार्य केवल ऐतिहासिक महत्व की घटनाएं मात्र नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान और भविष्य के भारत के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं। उनके आदर्श और सिद्धांत आज भी एक न्यायपूर्ण, समतामूलक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज के निर्माण में हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।

- **विरासत संरक्षण:** आज जब भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण, संवर्धन और पुनरुद्धार पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है, तब देवी अहिल्याबाई के द्वारा किए गए अथक प्रयास हमारे लिए एक ज्वलंत प्रेरणा स्रोत के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने न केवल मंदिरों का जीर्णोद्धार किया, बल्कि उनसे जुड़ी कला, शिल्प और परंपराओं को भी संरक्षण प्रदान किया। वर्तमान में महाराष्ट्र सरकार द्वारा उनकी स्मृति और प्रेरणा से प्राचीन विरासत जल प्रणालियों के जीर्णोद्धार जैसी परियोजनाएं प्रारंभ की जा रही हैं, जो उनके स्थायी प्रभाव का एक स्पष्ट उदाहरण है।
- **महिला सशक्तिकरण:** एक ऐसे युग में जब महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक ही सीमित मानी जाती थी और सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में उनकी भागीदारी नगण्य थी, देवी अहिल्याबाई ने न केवल सफलतापूर्वक एक बड़े और महत्वपूर्ण राज्य का संचालन किया, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर स्वयं सेना का नेतृत्व भी किया। उन्होंने पर्दा प्रथा जैसी रूढ़ियों को त्यागा, अपनी प्रजा के लिए सदैव सुलभ रहीं, और सामाजिक कुरीतियों जैसे सती प्रथा का विरोध किया, विधवाओं को संपत्ति का अधिकार दिलाया, तथा लड़कियों की विवाह की आयु बढ़ाने जैसे प्रगतिशील कदम उठाए। उनका जीवन और उनके कार्य आज भी करोड़ों भारतीय महिलाओं के लिए प्रेरणा का एक अक्षुण्ण स्रोत हैं।
- **नैतिक शासन:** देवी अहिल्याबाई का शासन न्याय, पारदर्शिता, प्रजा के प्रति गहन उत्तरदायित्व,

निस्वार्थ सेवा और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने राज्य के संसाधनों का उपयोग व्यक्तिगत विलासिता के लिए नहीं, बल्कि प्रजा के कल्याण और धर्म के कार्यों के लिए किया। उनकी वित्तीय शुचिता, उनकी न्यायप्रियता और उनकी प्रजावत्सलता आज के प्रशासकों, राजनेताओं और लोक सेवकों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करती है।

6. उपसंहार

शोध के प्रमुख निष्कर्षों का सार

प्रस्तुत शोध-पत्र के विस्तृत विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि देवी अहिल्याबाई होल्कर ने अठारहवीं शताब्दी के भारत में ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार, नवनिर्माण और लोक-कल्याण के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व, अद्वितीय और अत्यंत प्रेरणादायक योगदान दिया। उनकी गहन धार्मिक आस्था, भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण की उत्कट भावना, असाधारण प्रशासनिक कौशल, अटूट न्यायप्रियता और प्रजा के प्रति असीम वात्सल्य उनके इन युगांतरकारी कार्यों के मूल में निहित प्रेरक शक्तियाँ थीं।

काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, गया, द्वारका, रामेश्वरम सहित भारत भर में फैले अनगिनत मंदिरों, पवित्र घाटों, तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशालाओं, जलाशयों, मार्गों और अन्य अनगिनत जनोपयोगी संरचनाओं का निर्माण व जीर्णोद्धार कर उन्होंने न केवल भारत की अमूल्य भौतिक धरोहर को बचाया, बल्कि भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं और आध्यात्मिक चेतना को भी पुनर्जीवित और पुनर्प्रतिष्ठित किया। उनके इन कार्यों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव भी अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी था। इन निर्माण परियोजनाओं से स्थानीय समुदायों को बड़े पैमाने पर रोजगार मिला, कला-कौशल को प्रोत्साहन मिला और तीर्थयात्रा सुगम होने से विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क तथा व्यापार को भी बढ़ावा मिला।

'पुण्यश्लोका' और 'लोकमाता' के रूप में उनकी व्यापक स्वीकृति और ख्याति भारतीय जनमानस में उनके प्रति विद्यमान गहरे सम्मान, श्रद्धा और उनके द्वारा किए गए कार्यों की स्थायी प्रासंगिकता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। वे भारतीय इतिहास की उन विरल विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने जीवन और कर्मों से समय की सीमाओं को पार कर एक कालातीत आदर्श स्थापित किया।

भावी शोध एवं प्रेरणा के लिए दिशा-संकेत

यद्यपि देवी अहिल्याबाई के जीवन और कार्यों पर अनेक अध्ययन हुए हैं, तथापि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ और अधिक गहन शोध की आवश्यकता है:

- अहिल्याबाई द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में करवाए गए निर्माण कार्यों की स्थापत्य शैली, उनमें प्रयुक्त विशिष्ट निर्माण तकनीकों और विभिन्न कलात्मक प्रभावों का और अधिक सूक्ष्म एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

- उनके वित्तीय प्रबंधन, विशेषकर उनकी "खासगी" (व्यक्तिगत) संपत्ति के स्रोतों, उसके प्रबंधन और विभिन्न धर्मार्थ कार्यों में उसके व्यय की विस्तृत और दस्तावेजी जांच की जानी चाहिए।
- विभिन्न समकालीन रियासतों और शासकों के साथ उनके राजनयिक संबंधों का उनके द्वारा किए गए अखिल भारतीय निर्माण और जीर्णोद्धार कार्यों के संदर्भ में गहन अध्ययन उपयोगी होगा।
- सबसे महत्वपूर्ण, उनके जीवन, आदर्शों और शासन के सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर समकालीन भारत में विरासत संरक्षण, नैतिक एवं प्रभावी सुशासन, सामाजिक न्याय और महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को और अधिक सशक्त तथा सार्थक बनाने की दिशा में निरंतर चिंतन और क्रियान्वयन की महती संभावनाएँ विद्यमान हैं।

देवी अहिल्याबाई होल्कर का प्रेरणादायक जीवन और उनके द्वारा किए गए युगांतरकारी कार्य भारतीय इतिहास और संस्कृति के आकाश में एक ध्रुव तारे की भांति सदैव चमकते रहेंगे, जो आने वाली पीढ़ियों को कर्तव्यनिष्ठा, धर्मपरायणता और लोक-कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

7. संदर्भ-ग्रंथ सूची

- मैल्कम, सर जॉन. *ए मेमॉयर ऑफ सेंट्रल इंडिया, इन्क्लूडिंग मालवा, एंड एडज्वाइनिंग प्रोविंसेस.*.[5]
- मुंशी, के.एम..[29]
- मार्सडेन, ई..[2]
- त्रिवेदी, काशीनाथ..[14]
- गॉर्डन, स्टीवर्ट..[22]
- बैली, जोआना..[4]
- सहारिया, अनिल..[13]

(कृपया ध्यान दें: यह संदर्भ सूची उपलब्ध कराए गए स्निपेट्स में उल्लेखित नामों और कार्यों पर आधारित है। एक पूर्ण अकादमिक शोध पत्र में इन सभी स्रोतों का उचित प्रारूप में विस्तृत उद्धरण दिया जाना चाहिए।)

Works cited

1. Ahilyabai Holkar | Life, Reign, History, Legacy, Trivia, & Facts ..., accessed May 11, 2025, https://www.britannica.com/biography/Ahilaybai-Holkar
2. Essay on Ahilyabai Holkar in Hindi : छात्र ऐसे लिख सकते हैं रानी अहिल्याबाई पर निबंध, accessed May 11, 2025, https://leverageedu.com/blog/hi/essay-on-ahilyabai-holkar-in-hindi/
3. देवी अहिल्याबाई: जनकल्याण, सुशासन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रणेता, accessed May 11, 2025,

https://www.mpinfo.org/Home/TodaysNews?newsid=20250123N366&fontname=Mangal&LocID=32&pubdate=01/23/2025

4. देवी अहिल्याबाई होलकर : धर्म के प्रति समर्पण और राष्ट्रीय स्वाभिमान की जगाई अलख, मिली पुण्यश्लोक की उपाधि - Panchjanya, accessed May 11, 2025, https://panchjanya.com/2024/03/16/324642/bharat/know-about-devi-ahilyabai-holkar/
5. Ahilyabai Holkar: a philosopher queen remembered - Mathew Lyons, accessed May 11, 2025, https://mathewlyons.co.uk/2020/11/16/a-philosopher-queen-remembered/
6. This Indian Queen restored Hindu temples destroyed by the Mughals, accessed May 11, 2025, https://timesofindia.indiatimes.com/etimes/trending/this-indian-queen-restored-hindu-temples-destroyed-by-the-mughals/photostory/107562071.cms
7. *महेश्वर केबिनेट बैठक के संदर्भ में विशेष लेख* — *देवी अहिल्याबाई ..., accessed May 11, 2025, https://dhar.nic.in/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A5%87%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%9F-%E0%A4%AC%E0%A5%88%E0%A4%A0%E0%A4%95-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B8/
8. अहिल्याबाई होल्कर द्वारा बनवाए गए भारत के पांच विख्यात शिव मंदिर | ITIHASNAMA, accessed May 11, 2025, https://itihasnama.com/our-chepter/five-famous-shiva-temples-of-india-built-by-ahilyabai-holkar
9. Ahilyabai Holkar: काशी विश्वनाथ, सोमनाथ...अहिल्याबाई होलकर जिन्होंने टूटे मंदिरों को एक-एक कर बनवाया, जानिए कौन, accessed May 11, 2025, https://navbharattimes.indiatimes.com/india/know-all-about-ahilyabai-holkar-the-great-builder-of-demolished-hindu-temples/articleshow/85481878.cms
10. जयंती : बनारसी कैसे भूल सकते हैं इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर को, जिन्होंने विध्वंस के बाद कराया था श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण, accessed May 11, 2025, https://livevns.news/top-headlines/jayanti-how-can-banarasi-forget-queen-ahilyabai-holkar-of-i/cid11144194.htm
11. Devi Ahilya Bai Holkar: Shakti behind revival and safeguarding of Hindu faith in the 18th century - Organiser, accessed May 11, 2025, https://organiser.org/2024/05/31/230620/bharat/shakti-behind-revival-and-safeguarding-of-hindu-faith-in-the-18th-century/
12. Historians And Historiography In Modern India, accessed May 11, 2025, https://ia601403.us.archive.org/34/items/in.ernet.dli.2015.117772/2015.117772.Historians-And-Historiography-In-Modern-India_text.pdf
13. udgamvigyati.org, accessed May 11, 2025, https://udgamvigyati.org/admin/images/The%20Buildings%20of%20the%20Holkar%20State-%20Vivek%20Singh.pdf
14. मंदिरों का पुनरोद्धार कराने वाली लोकमाता अहिल्याबाई होलकर - VSK Bharat, accessed May 11, 2025, https://vskbharat.com/lokmata-ahilyabai-holkar-who-renovated-temples/

15. timesofindia.indiatimes.com, accessed May 11, 2025, https://timesofindia.indiatimes.com/etimes/trending/this-indian-queen-restored-hindu-temples-destroyed-by-the-mughals/photostory/107562071.cms#:~:text=She%20also%20renovated%20or%20constructed,Udupi%2C%20Gokarna%2C%20and%20Kathmandu.
16. Social Contribution of Ahilyabai Holklar - Studies in Indian Place Names, accessed May 11, 2025, https://tpnsindia.org/index.php/sipn/article/download/4581/4431/
17. Lokmata Ahilyabai Holkar: An Administrator Extraordinaire-II - शब्द बिरादरी, accessed May 11, 2025, https://shabdbiradari.in/lokmata-ahilyabai-holkar-an-administrator-extraordinaire-ii/
18. दूरदर्शी सोच और समाज कल्याण की मिसाल थीं अहिल्याबाई होलकर, कृषि क्षेत्र में भी रहा अहम योगदान, accessed May 11, 2025, https://kisansamvadtv.com/ahilyabai-holkar-jayanti-queen-who-know-for-farsighted-thinking-social-welfare-and-agriculture-work/
19. देवी अहिल्याबाई होलकर का हमारे इतिहास में क्या योगदान रहा? - Quora, accessed May 11, 2025, https://hi.quora.com/%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A5%80-%E0%A4%85%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%88-%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A4%95%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%BE
20. Ahilyabai Holkar - PMF IAS, accessed May 11, 2025, https://www.pmfias.com/ahilyabai-holkar/
21. *महेश्वर केबिनेट बैठक के संदर्भ में विशेष लेख* ----- *देवी अहिल्याबाई होल्कर के सुशासन और समाज कल्याण के गढ़े पथ पर अग्रसर मध्यप्रदेश सरकार* ----- - MPinfo, accessed May 11, 2025, https://www.mpinfo.org/Home/TodaysNews?newsid=20250123N130&fontname=Mangal&LocID=32&pubdate=23%20Jan%202025
22. Rani Ahilyabai Holkar - Arise Bharat, accessed May 11, 2025, https://arisebharat.com/2021/02/16/rani-ahilyabai-holkar/
23. वात्सल्य, दृढ़ता, शक्ति और भक्ति की मूरत अहिल्याबाई. - विश्व संवाद केंद्र, भोपाल, accessed May 11, 2025, https://www.samvad.in/Encyc/2024/9/11/Ahilyabai-the-embodiment-of-affection-determination-strength-and-devotion-.html
24. Ahilyabai Holkar - the Great Queen of Malwa - HinduPost, accessed May 11, 2025, https://hindupost.in/history/ahilyabai-holkar-the-great-queen-of-malwa/
25. अहिल्याबाई होल्कर: भारत के सनातन सांस्कृतिक मूल्यों की अपराजेय संरक्षिका | LOKPAHAL, accessed May 11, 2025, https://www.youtube.com/watch?v=A1VFifxvKw4
26. www.kalindicollege.in, accessed May 11, 2025, https://www.kalindicollege.in/wp-content/uploads/2025/01/National-Conference-on-Ahilyabai_034-Feb-25.pdf
27. काशी विश्वनाथ मन्दिर - विकिपीडिया, accessed May 11, 2025, https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A5%80_%E0%A4%B5

%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5_%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%B0

28. Kashi Vishwanath Temple Architecture & Design: A Timeless Legacy - India's Biggest Dashakarma Bhandar | Poojn.in, accessed May 11, 2025, https://www.poojn.in/post/19726/kashi-vishwanath-temple-architecture-design-a-timeless-legacy
29. Rani Ahilyabai Holkar: Story Of The Brave Queen Of Indore And Malwa | Times Now, accessed May 11, 2025, https://www.timesnownews.com/lifestyle/people/rani-ahilyabai-holkar-the-queen-who-restored-the-lost-glory-of-hindu-temples-article-111110450
30. Ahilyabai Holkar - Wikipedia, accessed May 11, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Ahilyabai_Holkar
31. oldror.lbp.world, accessed May 11, 2025, https://oldror.lbp.world/UploadedData/14317.pdf
32. Reviving Legacy: Inspiring story of Rajmata Ahilyabai Holkar and her dedication to Hindu heritage - Organiser, accessed May 11, 2025, https://organiser.org/2024/07/14/247214/bharat/reviving-legacy-inspiring-story-of-rajmata-ahilyabai-holkar-and-her-dedication-to-hindu-heritage/
33. Ahilyabai Holkar - Art and Culture Notes - Prepp, accessed May 11, 2025, https://prepp.in/news/e-492-ahilyabai-holkar-art-and-culture-notes
34. 12 Shiv Jyotirlings in India - Smita Holidays, accessed May 11, 2025, https://smitaholidays.com/blog-details/9/
35. सैंकड़ों मंदिरों का पुनरुद्धार कराने वाली महारानी थी अहिल्याबाई होलकर - प्रेरणा संवाद, accessed May 11, 2025, https://prernasamvad.in/story/Ahilyabai-Holkar-was-the-queen-who-renovated-hundreds-of-temples
36. सोमनाथ के प्राचीन अहिल्याबाई मंदिर को मिला नया रंग-रूप | The ancient Ahilyabai temple of Somnath gets a new look | Patrika News, accessed May 11, 2025, https://www.patrika.com/ahmedabad-news/the-ancient-ahilyabai-temple-of-somnath-gets-a-new-look-6770293
37. 'अप्रतिम कार्य थे अहिल्याबाई के' - Panchjanya, accessed May 11, 2025, https://panchjanya.com/2025/03/07/394105/bharat/bihar/ahilyabais-works-were-incomparable/
38. Vishnupad Temple Gaya: History, Architecture, and Darshan Guide - Prayag Pandits, accessed May 11, 2025, https://prayagpandits.com/vishnupad-temple-gaya-history-architecture-and-darshan-guide/
39. Why We Must Cherish The Legacy Of Devi Ahilyabai Holkar - Swarajya, accessed May 11, 2025, https://swarajyamag.com/culture/why-we-must-cherish-the-legacy-of-devi-ahilyabai-holkar
40. Ahilyabai Holkar - Wikipedia | PDF | History - Scribd, accessed May 11, 2025, https://www.scribd.com/document/697933270/Ahilyabai-Holkar-Wikipedia
41. timesofindia.indiatimes.com, accessed May 11, 2025,

https://timesofindia.indiatimes.com/city/nagpur/ahilyabai-holkar-the-inspiring-queen-who-renovated-temples-across-india/articleshow/108554715.cms#:~:text=%E2%80%9CAn%20ideal%20ruler%2C%20she%20renovated,the%20title%20of%20Punya%20Shlok.

42. 12 Jyotirlingas in India – Dwadash Jyotirling Temples of Lord Shiva - Char Dham Yatra, accessed May 11, 2025, https://www.chardham-pilgrimage-tour.com/jyotirlingas-india.html